REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु विद्यालय को प्रभावशाली बनाने के उपाय- एक समीक्षात्मक अध्ययन

मृत्युंजय कुमार सिंह
शोधार्थी, ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा

सारांशः

आज के युग में हम देख चुके हैं कि विद्यालय समाज का अभिन्न अंग है और उसे सामाजिक जीवन स अलग नहीं किया जा सकता है। परिवार वह संस्था है जहाँ बालक का पालन–पोषण होता है। पालन–पोषण के कुछ वर्षो बाद विद्यालय पर बालक का दायित्व आ जाता है। बालक के विकास में परिवार तथा विद्यालय दोनों ही मिलकर कार्य करेंगे तो विद्यालय अधिक प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य कर सकेंगे। इसके लिए विद्यालय अभिभावक संघ का निर्माण करें और अभिभावक दिवस मानने की प्रथा को जन्म दें। छात्रों के अभिभावकों के पास समय–समय पर उनकी प्रगति का विवरण प्रेषित करें एवं अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करके बालकों की समस्याओं एवं दिनचया को जानना चाहिये।

प्रस्तावनाः

सामाजिक–जीवन–विद्यालय उस समय तक भी अधिक प्रगति नहीं कर सकता जब तक कि वह अपना सम्पर्क समाज से नहीं रखता। विद्यालय इस सम्पर्क को बनाने के लिएः (अ) समाज सेवा में भाग लेना, (ब) समाज के सदस्यों को अपने कार्यक्रम में आमंत्रित करना, (स) सामाजिक विषयों का शिक्षण देना तथा (द) प्रौढ़ एवं समाज शिक्षा के प्रसार के कार्यक्रम बना सकता है। विद्यालय जितना समाज के सम्पर्क में रहेगा; उतना ही प्रभावपूर्ण ढ़ंग से कार्य करेगा।

नेपोलियन के अनुसार–''सरकार का प्रथम कर्त्तव्य जनशिक्षा है।'' अतः राज्य को चाहिये कि वह अच्छे एवं प्रगतिशील विद्यालयों की स्थापना करें एवं योग्य शिक्षकों का निर्माण करे। विद्यालय उसी समय प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य कर सकते हैं जबकि उनको आर्थिक सहायता अधिक मिलेगी और उस पर नियंत्रण भी उचित होगा।

उपरोक्त बातों पर विचार करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि विद्यालय राष्ट की प्रगति में बहुत योग होते हैं। राष्ट्र की नींव को मजबूत करते हैं और उसके आदर्शो को और भी अधिक प्रगतिशील बनाते हैं।[1–3]

समुदाय

समुदाय से तात्पर्य व्यक्तियों के उस समूह से है जो एक स्थान पर उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रहता है। समुदाय अंग्रेजी शब्द कम्युनिटी (Community) का रूपान्तर है। इसका अर्थ है–पारस्परिक सहयोग। ठीक ही है– जब व्यक्तियों का समूह किसी एक स्थान विशेष पर रहता है तो उसके सहयोग से बिना सार्वजनिक जीवन चल

नहीं सकता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि परिवार के बाद बालक का समाजीकरण समुदाय तथा विद्यालय में होता है। ऐसा इसलिए है कि समुदाय का आधार हम (We) की भावना है। वहाँ मैं (I) को स्थान नहीं है। समुदाय के सदस्यों में एक–दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहयोग की भावना पाई जाती है। समुदाय समाज का व्यवस्थित अंग है किन्तु स्वयं में यह समाज नहीं है।

मानव जीवन में स्थान तथा स्थानीयपन का बहुत महत्त्व है। यह स्थानीयपन समदुाय के रूप में प्रकट होता है। यों तो समुदाय को हम राज्य, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ले जाते हैं परन्तु हमारा आशय शिक्षा में केवल स्थान विशेष के छोटे या बड़े समूह से है।

समुदाय और समाजीकरण

परिवार के पश्चात् समुदाय में बालक की शिक्षा होती है। समुदाय में बालक को अपने मित्रों के मध्य रहना पड़ता है। वे मित्र उसके लिए समाज का निर्माण करते हैं और जिस प्रकार का उसका समाज होगा, वैसी ही आदतें तथा व्यवहार बालक में हो जायेंगे। विलियम ईमर के अनुसार–''मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है, इसलिए उसने वर्षो से सीख लिया है कि व्यक्तित्व और सामूहिक क्रियाओं का विकास समुदाय द्वारा ही सर्वोत्तम रूप में किया जा सकता है।''

समुदाय बालक का समाजीकरण अग्रलिखित प्रकार से करता है–

सामाजिक वातावरण का निर्माण करके–समुदाय एक स्थानीय समूह होता है। वह स्थानीय वातावरण यदि सांस्कृतिक एवं सौम्य है तो वैसा ही प्रभाव बालक के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास पर पड़ेगा। समुदाय वस्तुतः अपने अन्तःवासियों के चरित्र, भावनाओं एवं संवेगों का पूरा–पूरा प्रतिनिधित्व करता है। अतः इन्हीं भावनाओं, संवेगों एवं चरित्र का आरोपण बालकों पर भी उसी प्रकार का होता हैं जैसे समाज के अन्य सदस्यों पर। वातावरण निर्माण की प्रक्रिया उसकी विशेषता होती है।

सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करके– समुदाय में आचार–विचार व्यवहार की अभिव्यक्ति समय–समय पर आयोजित उत्सवों तथा समारोहों से होती है। इन उत्सवों में समुदाय की आन्तरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हुआ करती हैं। अभिव्यक्ति का यह ढ़ंग ही उस सांस्कृतिक वातावरण की रचना करती है जिसमें बालक सहज रूप से कार्य करता है। सांस्कृतिक वातावरण से बालक के व्यवहार में परिष्कार होता है और समुदाय की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करने में अपनी शक्ति लगा देता है।

शिक्षा पर नियंत्रण करके– समुदाय की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था होती है। समुदाय की आवश्यकता की पूर्ति करनेवाली शिक्षा ही समुदाय को उन्नत बनाती है। समुदाय आवश्यकतानुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है और उस पर अपनी आवश्यकता के अनुकूल नियंत्रण भी करता है। यदि समुदाय शिक्षा पर निंयत्रण नहीं करता तो समुदाय के नेता अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम करते हैं और समुदाय की भावी पीढ़ी के लिए शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करते हैं।

विद्यालयों पर नियंत्रण करक–हावर्थ का कहना है–''स्कूल समाज के चरित्र में परिष्कार करने का साधन है। सामाजिक विकास की दिशा में यह परिष्कार उनके आदर्श एवं विचारों पर निर्भर रहता है जो विद्यालय का संचालन करते हैं।'' अतः स्पष्ट है कि समुदाय विद्यालय को अपने हाथ में लेकर ही वांछित दिशा में प्रगति कर सकता है। समुदाय का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह विद्यालयों का संचालन करने के लिए योग्य व्यक्तियों को नियंत्रण हेतु नियुक्त करे। इसके अभाव में विद्यालयों में अराजकता आ जाती है।

विद्यालय तथा समुदाय में सहयोग– विद्यालय उस समय तक प्रभावपूर्ण ढ़ंग से कार्य नहीं कर सकते, जब तक कि समुदाय तथा विद्यालय में पारस्परिक सहयोग नहीं होता। क्रो एवं क्रो के अनुसार–''विद्यालय के उन नेताओं को जिनको नागरिकों ने शैक्षणिक दायित्व सौपे हैं, विशिष्ट रूप से सहयोग दिया जाना चाहेंगे।''

अनौपचारिक साधनों की व्यवस्था– बालक समुदाय के अन्दर विद्यालय से अधिक सीखता है। विद्यालय में तो केवल वह कुछ समय के लिए ही रहता है, उसका बाकी समय तो परिवार एवं समुदाय के अपने साथियों में ही व्यतीत होता है। अतः समुदाय का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह परिवार तथा समुदाय में ऐसे केन्द्रों की स्थापना करे जिससे समुदाय का हर बालक किसी–न–किसी रूप में उससे प्रभावित अवश्य हो। समुदाय पुस्तकालय, वाचनालय, संग्रहालय आदि की व्यवस्था करे जिससे अनौपचारिक शैक्षिक साधनों का विकास हो सके।

सामुदायिक शिक्षा के प्रभावक तत्व–समुदाय का शिक्षा देने में अनौपचारिक हाथ अवश्य है परन्तु इसकी भूमिका किसी भी औपचारिक संस्था के लिए रीढ़ का काम करती है। समुदाय को समाजीकरण के क्षेत्र में प्रभावित करने वाले तत्त्व इस प्रकार हैं–

(अ) सामाजिक– समुदाय समाज का लघु रूप है। समाज के प्रतिनिधि होने के कारण समुदाय विशिष्ट पद्धतियों, रीति–रिवाजों, प्रथाओं, रूढ़ियों के द्वारा प्रभावित होता है। यह प्रभाव समुदाय को अपने नियंत्रण में रखता है। जिस प्रकार का समाज होगा, उसी प्रकार की उसके समुदाय की स्थिति होगी। सामाजिक प्रभाव से ही समुदाय के विभिन्न प्रक्रियायें प्रभावित करती हैं।

(ब) सांस्कृतिक–समाज की संस्कृति भी होती है। मैकआइवर के अनुसार, ''हमारी सभ्यता वह है जो हम इस्तेमाल करते हैं, हमारी संस्कृति वह है जो हम है।'' अतः हमारा आचार–विचार उसी से प्रभावित रहता है। सांस्कृतिक वंशक्रम से हमारा समाज भी प्रभावित होता है और समुदाय भी। अतः सांस्कृतिक तत्व भी समुदाय को प्रभावित करते हैं।

(स) राजनीतिक–आज का युग सांस्कृतिक नहीं, राजनीतिक है। राजनीतिक प्रभाव से समुदाय भी प्रभावित होते हैं। अतः समुदाय में राजनीति ने विद्यालयों को भी प्रभावित किया है। परिणामतः समुदाय का नियंत्रण राजनीतिक सत्ता के हाथों में आ गया है।

(द) आर्थिक– आर्थिक कारण भी समुदाय की प्रगति का द्योतक है। अर्थाभाव के कारण ही समुदाय पिछड़ जाता है और इसी कारण से आगे बढ़ जाता है।

अतः समुदाय बालक के समाजीकरण के अनौपचारिक साधन के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

सामाजिक तथा वैयक्तिक मूल्यों की अभिवृद्धि

सामाजिक तथा वैयक्तिक मूल्यों की अभिवृद्धि का सम्बन्ध समाजीकरण की प्रक्रिया से है। क्लाकहोर्न तथा मरे के अनुसार–''नर्सरी से आरम्भ होकर समाजीकरण की प्रक्रिया आजीवन चलती है। अन्य बातों के अतिरिक्त जो सीखा जाना चाहिये, वह यह है। अस्वीकार्य आवश्यकताओं को व्यक्त न करने अथवा मृदु रूप में व्यक्त करने की शक्ति, किसी लालसा को किसी वर्जित लक्ष्य से हटाकर किसी स्वीकार्य लक्ष्य पर स्थानान्तरिक करने की योग्यता; क्रिया की बहुसंख्यक स्वीकृत विधियों का अपने आप प्रयोग करन की आदत; किसी चक्र (Routine) का पालन करने की योग्यता।'' किसी भी आदत या योग्यता को विकसित करने का सम्बन्ध सामाजिक मूल्यों एवं वैयक्तिक मूल्यों के विकास तथा अभिवृद्धि से इसलिए हो जाता है कि समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना इसकी अभिवृद्धि नहीं हो सकती। इसके अभाव में किसी भी वैयक्तिक तथा सामाजिक अभिवृद्धि की संभावना नहीं होती।[4–5]

ये सामाजिक तथा वैयक्तिक मूल्य सामाजिक विकास के कारण विकसित होते हैं–

स्वत्वाधिकार की भावना–गुथरी के अनुसार–'बच्चों में स्वत्वाधिकार की भावना से सबसे पहले अपने परिवार के लोगों की या उन लोगों की निजी सम्पत्ति का सम्मान करने की आदत वे बाद में चलकर सीखते हैं। स्वामित्व की रक्षा की भावना भी वैयक्तिक अनुभव पर निर्भर है और इसीलिये वह हर बच्चे में सामान्य रूप से पाई जाती है।

वर्ग प्रतिष्ठा– समाज में अपने समूह या वर्ग की प्रतिष्ठा के प्रति संज्ञान होना सामाजिक विकास की ही देन है। वैज्ञानिक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि निर्णयों तथा क्रियाओं के निर्धारण में सामाजिक वर्ग एक प्रमुख कारक होता है। समाज के सभी साधन वर्ग प्रतिष्ठा से जुड़े हैं।

सामाजिक भूमिका– सामाजिक विकास के अध्ययनों से पता चलता है कि सामाजिक भूमिका का निर्वाह वे ही व्यक्ति ठीक प्रकार से करते हैं जिनके आचरण व्यवहार तथा गुणों का संगठन, परिवार में बालक की स्थिति, माता–पिता की भूमिका आदि सभी तत्त्व मिलकर सामाजिक भूमिका का निर्माण करते हैं।

मैत्री– सामाजिक विकास के कारण बालकों में मैत्री भाव उत्पन्न होता है। आरंभ से ही बालकों में मैत्रीवाद का विकास एक दो या अधिक बालकों के साथ होता हे। बालक घर में पड़ोस के बालकों से मित्रता करते हैं। छोटे बच्चों में मैत्री भाव के प्रति लड़के–लड़कियों में कोई अन्तर नहीं होता। बड़े होने पर विषम–लिंगी मित्रता विकसित हो जाती है।

प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग– सामाजिक विकास की ही देन है कि बालकों में सहयोग तथा प्रतिस्पर्धा के गुण विकसित होते हैं। प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग के कारण समाज विरोधी गुणों का विकास नहीं होता। प्रतिस्पर्धा के संतुलित विकास से ही व्यक्ति के अनेक सुप्त गुण जागृत होते हैं।

सामुदायिक भावना– बालक जिस समुदाय में रहता है उसके प्रति उसके मन में अधिक उत्तम भाव विकसित होने लगते हैं। समुदाय के व्यक्तियों के साथ उसका सामंजस्य होने लगता है। सामुदायिक भावना का विकास इस तेजी से हुआ है कि अब एक–दूसरे समुदाय के बालक भी अपने में निहित गुणों को विकसित करने लगे हैं।

राष्ट्रीयता– समाज राष्ट्र, सामाजिक, राजनीतिक संस्थायें हैं। राष्ट्र के प्रति भक्ति भावना का विकास समाज की उत्तम भावनाओं के कारण होता है। साहसी वीरों की कहानियाँ सुनकर राष्ट्र भक्ति की भावना को विकसित किया जा सकता है।

मातृ–पितृ भक्ति– भारत में मातृ देवोभाव, पितृ देवोभव के आदर्श को अपनाया गया है। परिवार में ऐसे आदर्श तथा आचरण बालकों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं कि उनमें स्वतः ही माता–पिता के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति–भाव उत्पन्न होने लगते ह।

अनुशासन–सामाजिक मान्यताओं तथा मर्यादाओं के विकसित होने के साथ–साथ अनेक ऐसी बातें बालक के मन में स्वतः विकसित होने लगती हैं जो कालान्तर में उसे अनुशासन की ओर ले जाती हैं। माता–पिता शारीरिक दण्ड देकर बालक को अनुशासित करते हैं। शिक्षित माता–पिता शारीरिक दण्ड न देकर वातावरण निर्माण के द्वारा अनुशासन की भावना का विकास करते हैं।

नैतिक मूल्यों का विकास– यद्यपि सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों में घनिष्ठ संबंध होता है तो भी अनेक अंशों (Degrees) में भिन्नता होती है। नैतिक स्तर के लिए परिस्थिति की पहचान और मानदण्डों की निष्ठा की आवश्यकता होती है। वीर पूजा में नैतिक गुणों के प्रति प्रशंसा का भाव निहित होता है।

सौजन्य– समाज में रहकर दूसरे की सहायता करना सौजन्य कहलाता है। सौजन्य का गुण सामाजिक सम्पर्क से ही विकसित होता है। इससे बालक में अपने प्रति आत्मविश्वास जागृत होता हैं महात्मा गाँधी, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, ईसामसीह, राम, कृष्ण जहाँ वीर पूजा के आदर्श हैं वहाँ वे सौजन्य की मूर्ति भी रहे हैं।

सामाजिक आचरण–समाज की मान्यताओं तथा मर्यादाओं के अनुरूप कार्य करने की क्षमता को ग्रहण करना सामाजिक आचरण कहलाता है। ग्रिफिथ ने सामाजिक आचरण के विषय में कहा है–'' सामाजिक आचरण विकास की सामान्य पृष्ठ भूमि में प्रारंभिक बाल्यावस्था में इस समझ–बूझ क क्रमिक उत्पत्ति में मिलता है जिन्हें हम पदार्थ प्रविधियाँ कहते हैं। उनमें आपस में बड़ा अन्तर होता है।'' सामाजिक आचरण में परिणामात्मक (Quantitative) तथा गुणात्मक (Qualitative) अन्तर होता है।

चरित्र–चरित्र तथा उसके गुणों की वृद्धि सामाजिक विकास द्वारा होती है। समाजीकरण के द्वारा जो गुण विकसित होते हैं, उनका कुल योग चरित्र कहलाता है। व्यक्ति को अपनी चारित्रिक विशेषताओं को समाज सम्मत रूप देना आवश्यक होता है।

सामाजिक परिपक्वता– सामाजिक विकास से सामाजिक तथा वैयक्तिक मूल्यों में परिपक्वता के अनेक स्तरों का विकास होने लगता है। यदि बड़ा आदमी बच्चों जैसी हरकतें करे तो उसे अच्छा नहीं माना जाता और छोटा बालक बड़ों जैसी बातें कर तो कहा जाता है कि उसके पेट में दाढ़ी उग आई है। आयु, समूह, प्रेरक, संवेग तथा मानसिक नियंत्रणों का सामाजिक परिपक्वता पर प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ सूची–

1. योजना, मार्च–1996
2. योजना, मई–1995
3. योजना, अप्रैल–1998
4. योजना, जनवरी–2000
5. योजना, जुलाई–2003